# और उस दिन मोमिन खुश होंगे

ईद उल फितर 1440 हिजरी के मौके पर
मुस्लिम उम्मह के लिए संदेश

मौलाना असीम उमर



**और उस दिन मोमिन खुश होंगे**
**ईद उल फितर 1440 हिजरी के मौके पर**
**मुस्लिम उम्मह के लिए संदेश**
**मौलाना असीम उमर**

**अस-सहब मीडिया (उपमहाद्वीप)**
**वर्ष 2019/ हिजरी 1440**

**وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾**

और जब उनमें से एक समूह ने यह कहा : ओ यसरब (मदीना) के लोगों, ठहरने के लिए तुम्हारे पास अब कोई जगह नहीं है, इसलिए वापस चले जाओ। और उनमें से ही एक समूह पैगम्बर से (जाने की) अनुमति मांग रहा है: वास्तव में, हमारे घर असुरक्षित हैं, जबकि वे पहले असुरक्षित नहीं थे, उन्हें और कुछ नहीं, बल्कि मुक्ति चाहिए।'' (अल अहजब 13)

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّـهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّـهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾

''जब मोमिनों ने संगठित सेनाओं को देखा तो कहा, ''अल्लाह और उसके पैगम्बर ने हमसे यही वादा किया था और अल्लाह तथा उसके पैगम्बर ने सच ही कहा था। इसने विश्वास और समर्पण को और आगे बढ़ाया है।'' (अल अहजब:22)

अल्लाह करे कि मुस्लिम उम्मह के लिए 1440 हिजरी (2019) की ईद मुबारक हो, क्योंकि यह अपने साथ इस्लामिक अमीरात, अफगानिस्तान की जीत लाया है। यह ईद शोषितों, कैदियों मुहाजिरिनों और मुजाहिद्दीनों के लिए भी मुबारक हो। अल्लाह, इस्लामिक अमीरात, अफगानिस्तान के विजय को उम्मह का सम्मान तथा गौरव वापस लौटाने का जरिया बनाए। हम इस उपमहाद्वीप की ओर से ईद की मुबारकबाद देते हैं और अमीर-उल-मोमिनीन, शेख हिब्बतुल्लाह अखवानजादा, शेख आयमन - अल -जवाहिरी और मुजाहिदीन ने नेताओं और इस दुनिया में सभी तरफ जिहाद के मैदान में मौजूद मुजाहिदीनों को इन जीतों के लिए मुबारकबाद देते हैं।

अल्लाह इस ईद को शुहदा के परिवारों के लिए भी मुबारक करे, क्योंकि उनके अपने लोगों के बलिदान के कारण ही आज उम्मह को यह दिन देख पाना नसीब हुआ है।

11 सितंबर को शानदार हमले के बाद तत्कालीन फ़िरऔन अमेरिका के राष्ट्रपति बुश (जार्ज डब्ल्यू बुश) ने मुस्लिम उम्मह के खिलाफ लड़ाई की घोषणा कर दी। उस अहंकारी, यहूदी गुलाम ने यह कहा कि हम थकेंगे नहीं, हम गलती नहीं करेंगे और हम असफल भी नहीं होंगे। जो इस सांसारिक सुखों में भी विश्वास रखने वाले थे, उन्होंने तुरंत इस बात पर विश्वास कर लिया और मदीना के मुनाफिकिनो की भूमिका निभाने वालों ने उन मोमिनों को व्यथित करने के लिए यह कहा "ओ यसरब मदीना के लोगों, तुम्हारे लिए अब कोई जगह नहीं हैं, इसलिए वापस चले जाओ। यानी जिहाद के लिए अब कोई जगह नहीं बची है और अब "तलवार द्वारा निर्धारित" शरिया का भविष्य भी क्या होगा। आज अमेरिका खुद उस लड़ाई में शामिल हो रहा है। कौन इसका विरोध कर सकता है। इसलिए जिहाद और जिहाद की पुकार मर जाएगी। लेकिन वे लोग, जिनके दिल ईमान से भरे हैं, अमेरिकी बमबारी के बीच भी यह घोषणा कर रहे थे: अल्लाह और उसके पैगम्बरों ने हमसे यही वादा किया था, और अल्लाह और उसके पैगम्बरों ने हमसे सच ही कहा था। इस सबने उनके विश्वास और समर्पण को बढ़ाया है।

अमेरिका की अफगानिस्तान पर चढ़ाई अल्लाह का कहा हुआ यह एक वचन है कि वह शक्तिशालियों को कमजोर और निहत्थे मुस्लिमों के हाथों अपमानित कराता है। आज 18 साल के बाद, अल्लाह का वचन कमजोर मुस्लिमों को यह बताता है कि:-

फिज़ा ए बदर पैदा कर फरिश्ते तेरी नुसरत को
उतर सकते हैं गरदूँ से क़तार अंदर क़तार अब भी

2001 से 2019 तक की अवधि में किस बात ने अमेरीका को उस मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया है कि वह अपने पतन की ओर तेजी से बढ़ रहा है। पहले जो सबको युद्ध की धमकियां देता रहा है, आज युद्ध विराम की भीख मांग रहा है। सवाल यह उठता है कि क्या महासागरों का सीना चीर पाकिस्तान आने वाली नौ सैनिकों की नौकाएं डूब गई हैं? क्या जमीन पर रेंगती चींटियों को भी देख लेने का दावा करने वाले ड्रोन अंधे हो गए हैं? क्या जान लेने और देने का दावा करने वाले अमेरिका के अमेरीकी बी 52 और बी 2 को जंग लग चुका है। उस टेक्नलॉजी का क्या हुआ, जो मुस्लिम बस्तियों को तोरा-बोरा में बदल देने का दावा करती थी, आज वे खुद तोरा-बोरा में कैसे बदल गए हैं और भाग खड़े हुए हैं।सब कुछ मौजूद है। लेकिन टेक्नलॉजी के इस युग में भी मेरे अल्लाह के वचन नहीं बदलते हैं। जब अल्लाह अहंकारियों को सजा देता है, तो यह काम वह तब करता है, जब वे अपनी उन्नति की चरम सीमा पर होते है, जब वे अहंकार के मद में चूर होकर अपने आप को खुदा घोषित कर देते हैं।

इसलिए, अहंकारी पर अपनी पकड़ बनाने के बाद महान मुहम्मद ﷺ ने यह घोषणा की के चूंकि ऐसा कोई समूह नहीं था, जो अल्लाह के खिलाफ उसकी मदद कर सके और ना ही वह खुद ऐसा है, जो अपनी हिफाजत खुद कर सके। जब वह दमनकारियों पर अपनी पकड़ बनाते हैं, तो उनकी शक्तियां, कूटनीति या कोई भी रणनीति उन्हें अल्लाह के आक्रोश के सामने बचा नहीं पाती है।

अहंकारियों में से जो कोई भी अल्लाह द्वारा दण्डित किया जाता है वह तब ही दंडित किया जाता है जब वह अपने उत्थान की चरम सीमा पर होता है, इसलिए, प्रभु ने उनके पापों को शांत करने के लिए ऐसी यातनांए दीं, जो सभी के लिए एक समान थीं। और उन्हें इसके परिणाम का कोई डर नहीं है। उन्हें इसके बाद के प्रभाव का कोई डर नहीं है। उसे अपनी कोई शक्ति भी खत्म होने का डर नहीं और फिर ना ही उनका धन उन्हें अल्लाह के दण्ड से बचा सकेगा।

अफगानिस्तान के इस्लामिक अमीरात की जीत, मुस्लिम उम्माहों के लिए एक खुशखबरी है क्योंकि अल्लाह महान ने अपने सबसे बड़े दुश्मन को इन जिहादी हमलों के माध्यम से इस हद तक थका दिया है कि सुपर पावर की सेनाओं ने और आगे लड़ने से मना कर दिया है। अन्यथा, क्या यहूदियों का धन समाप्त हो गया है, जो उन्होंने अमेरीका को धन देना बंद कर दिया है? यदि अमेरिकी सैनिक युद्ध  जारी रखने पर सहमत होते तो यहूदी उन्हें पैसा अभी भी देते रहते। यहूदियों ने अपने कारखाने और उद्योग अमेरिका से चीन को अंतरित नहीं कर दिए होते, अगर अमेरिकी अभी भी इस युद्ध  की वेदिका पर अपने बच्चों की आहुति देने के लिए तैयार होते। लेकिन अमेरिकी सेना के आगे लड़ने से मना कर दिया।

2001 के अमेरीका को ध्यान से देखिए ..... अखबारों, स्तंभों और टेलिविजन से आने वाले उत्तेजक शब्दों को याद करें .....; और फिर इस युद्ध  के अठारह वर्षों के इतिहास का अध्ययन करें। तुम पाओगे कि अल्लाह की महानता के प्रति तुम्हारा ईमान और ज्यादा मजबूत हुआ है और आज भी वह जिहाद के मैदानों में निर्बलों के हाथों शक्तिशालियों को समाप्त करने में सक्षम है।

अमेरीका के खिलाफ यह जिहाद उन परिस्थितियों में शुरू हुआ जब इस्लामिक अमीरात अफगानिस्तान को खत्म करने का दावा करना शुरू किया गया। तालिबान की सारी दौलत लूट ली गई, ज्यादातर नेता या तो जेल में बंद थे या फिर मार दिए गए थे ..... लेकिन अल्लाह के वादे में बसा अटूट विश्वास असहाय कारवाँ को अमेरीका के खिलाफ संघर्ष के लिए उकसाता रहा। इसलिए, ऐसे कई समूह थे, जिनके पास कलाश्निकोव तक नहीं था, बल्कि कुछ के पास कुल्हाड़ी और कुछ हाथों में तलवारें थीं..... शुरूआती लड़ाई में कलाश्निकोव की गोलियाँ अमेरीकी बैरकों को कोई नुक्सान नहीं पहुँचा सकीं। देखने वालों और विश्लेषकों ने यहाँ तक कहा कि ये क्लाश्निकोव अमेरीका का मुकाबला कैसे कर पाएगा। लेकिन अल्लाह के हुक्म को मानने वाले नतीजों के बारे में सोचे बिना अंजाम देते रहे और इस पर डटे रहे कि अल्लाह ने उनके लिए दो में से एक तोहफा रखा हुआ है। इसलिए, पर्वतों से टकराने का जज्बा बढ़ता गया। मुहम्मदﷺ के बेटों ने अपने उम्माहों की सलामती के लिए बढ़ते तूफानों (ज्वार) से मुकाबला करना जारी रखा, वे डूबते-उतराते हुए, अंत में बाहर आते रहे।

आसमान गवाह है कि, आदरणीय लोगों की इस जमीन पर इतिहास लिखा जा रहा है। एक बार एक मुजाहिद सड़क पर माइन बिछाने गया। एक ड्रोन मिसाइल ने उसका खात्मा कर दिया।

उसके शरीर के चिथड़े  हवा में उड़ गए। यह देख कर एक अन्य मुजाहिद ने उस माइन को उठाया और उसी जगह पर गया, एक और मिसाइल गिराई गई और सारा वातावरण बेहतरीन खुशबू से भर गया। एक तीसरे मुजाहिद ने तीसरी माइन उठाई और सुनिश्चित मौत के लिए छलांग लगा दी। ड्रोन ने भी उस पर आक्रमण किया। एक ही कतार में तीन शहीद अपने ही साथियों को मरता देख कर भी उन्हें अपने मिशन से नहीं रोक पाया। उन्होंने जिहाद करना नहीं छोड़ा। वे जिहाद से निराश करते हुए अपने लोगों के पास यह कहते हुए लौट कर नहीं गए कि ''अमेरीका से लड़ाई करने का क्या फायदा है। अमेरिकी टेक्नलॉजी से किस तरह मुकाबला किया जाए, उनके और हमारे बीच कोई मुकाबला नहीं है, बल्कि एक चौथे मुजाहिद ने उसकी जगह ले ली। ड्रोन अभी भी वहीं था। पायलट भी सो नहीं रहा था। सब कुछ था वहाँ। वहाँ टेक्नलॉजी थी। मुजाहिद ने जमीन खोदी, सुरंग बिछाई और अपनी जगह लौट कर अमेरिकी काफिले के गुजरने का इंतजार करने लगा। अपनी जमीनी और हवाई निगरानी के साथ काफिला आगे बढ़ता गया और उस सुरंग के ऊपर से गुजरते टैंक में विस्फोट हो गया। इन बेमिसाल शहादतों के चलते यह जिहाद जारी रहा। एक शहादत के बाद दूसरी शहादत। एक माइन को लगाने के लिए तीन मुजाहिदों ने अपनी शहादत दे दी। ये यादगार लम्हे हैं। एक मुजाहिद हाथों में पी.के.  मशीन गन थामे अकेला अमेरिकी रक्षादल के सामने डटा रहता है। अकेला ही उस रक्षा दल को रोके रखता है, ताकि उसके साथी सुरक्षित बचकर निकल जाएं। टैंक। हवाई जहाज। हथियार बंद गाड़ियाँ, और उन सब के सामने खड़ा अल्लाह का अकेला सिपाही, लेकिन किसी भी अमेरिकी ने उसका मुकाबला करने की हिम्मत नहीं दिखाई, बल्कि यह रक्षादल वापस लौट गया।

एक मुजाहिद था,  जिसके पास रूमाल से बंधी टूटी हुई दूरबीन वाली एक राइफल थी। एक सप्ताह तक वह सूखी रोटी और ग्रीन टी के सहारे जीवित रह कर जंगल में शरीया के दुश्मनों को निशाना बनाता रहा और मारता रहा। रूमाल से बंधी टूटी दूरबीन तथा पुराने जमाने के एक गन से एक व्यक्ति ने 24  अमेरीकियों को मारा। ये वर्तमान समय की कहानियां हैं ---------।

40  देशों की सेनाएं बिना किसी कारण के नहीं भागीं। आप क्या निष्कर्ष निकालेंगे? सैन्य विश्लेषकों से पूछो ---------- यह कैसी तुलना हैं? जहाँ रक्षादल के आगे-पीछे उसकी सुरक्षा के लिए ड्रोन,  सैटेलाइट ---------- हेलिकॉप्टर थे,  वहाँ इन ड्रोनों, सैटेलाइटों और विमानों के सामने ही मुजाहीद्दीन ने उनको मार दिया। यदि यह एक या दो दिन हुआ होता तो यह कहा जा सकता था कि ड्रोन-ऑपरेटर नशे में था,  या सो गया था। यह 17-18 वर्षों की कहानी है। ये नवीनतम प्रौद्योगिकियां मुहम्मदﷺ के गुलामों को डरा नहीं सकतीं। एक के बाद एक शहादतें,  इस उम्माह की माताओं को पीछे नहीं हटा सकतीं। इसकी बजाय मोहम्मद द्वारा प्रारंभ किए गए शरीया के लिए युद्ध  में वे अपने लाड़ले बेटों को भेजना जारी रखीं। इतिहास याद रखेगा कि पश्चिमी सभ्यता अपने पुत्रों को इस युद्ध  में नहीं भेज सकती,  किन्तु मुहम्मदﷺ के उम्मह की माताएं अभी भी एक के बाद एक,  अपने पुत्रों को युद्ध  क्षेत्र में भेज रही हैं।

इन बलिदानों की वजह से, अल्लाह ने अपनी सहायता भेजी तथा वह समय आया जब घात लगाकर किए गए एक ही हमले में आठ से दस अमेरिकी टैंक नष्ट कर दिये गए। अपने सैन्य विश्लेषकों को बताओ कि आठ सौ अमरिकी टैंक केवल एक जिले में नष्ट कर दिये गए हैं। उनका विवेक नष्ट हो जाएगा। वे इसका विश्लेषण कहाँ से करेंगे?1 1

अल्लाह के सुन्ना में आगे कहा गया है, ''यदि आप अल्लाह (द्वारा विहित धर्म) की सहायता करेंगे, तो वह आपकी सहायता करेगा तथा आपकी नींव को स्थिर रखेगा।'' यदि आप अल्लाह के धर्म की सहायता करेंगे, तो अल्लाह आपकी सहायता करेगा। अल्लाह आपकी इस प्रकार सहायता करेगा कि दुनियां आश्चर्यचकित रह जाएगी। आज भी अल्लाह की सुन्ना जारी है। वर्तमान समय में भी, वह वाहिद (एकमात्र), अहद (केवल) समद (सभी द्वारा शाश्वत रूप से खोजा गया) है।

आज भी, इस पृथ्वी पर उसकी सर्वोच्चता है। इस दुनियां का हर हिस्सा उसके नियन्त्रण में है। अल्लाह ने अपना प्राधिकार अमेरिकी प्रौद्योगिकी को नहीं सौंपा है। कोई उसके राज्य को बांट नहीं सकता। उसकी पुस्तक के निम्नलिखित छन्द आस्तिकों के लिए अभी भी ताजा हैः-

''इसलिए हमने पृथ्वी को उसे और उसके निवास-स्थान को निगलने दिया। तब उसके पास अल्लाह के विरूद्ध सहायता के लिए कोई न था, न ही वह उनमें से था, जो अपने आप को बचा सकते थे।''

जब वह अपने धर्म के शत्रुओं का नाश करता है, तब कोई सेना उन्हें नहीं बचा सकती। कोई मित्र उनकी रक्षा नहीं कर सकता। उसके श्रेष्ठ छन्द आज के इन प्रबोधनों का बखान कर रहे हैं। ''यह मामला पहले भी अल्लाह के हाथ में था और इसके बाद भी (यह उसके ही हाथ में होगा)। तथा उस दिन आस्तिक खुशी मनाएंगे।''

यह कि, हे अपने बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक होने पर चिंता करने वालों! हे उम्मह को जिहाद से निराश करने वालों, हे इस अज्ञानी सभ्यता की अमर्यादा में इस्लामिक मदरसों को डूबाने वालों।

अमेरिका के आगमन से पूर्व, सभी निर्णय अल्लाह के हाथों में थे तथा अमेरिका के पतन के बाद ये उसके हाथों में रहेंगे। अमेरिका के पतन के बाद ये शक्तियां चीन या भारत को हस्तांतरित नहीं होंगी। ''यह मामला पहले भी अल्लाह के हाथ में था और इसके बाद भी (यह उसके ही हाथों में होगा)।''

यह अयात इतनी महान है कि जो उनको बहुत कुछ सिखाती है जो शक्तिशाली की आज्ञा मानते हैं। हे भौतिक शक्तियों के पूजकों। पहले आपने ब्रिटेन की शक्ति की पूजा की। इसका पतन होने पर आप अमेरिका के समक्ष झुके और अब आप देखते हैं कि जिहादी प्रहारों के कारण अमेरिकी प्रतिमा गिरने वाली है, तो आप अल्लाह के धर्म को छोड़कर, मोहम्मद की उम्माह को त्याग कर

चीन की तरफ जा रहे है, तुर्किस्तान के लाखों मुसलमानों को त्याग कर आप चीन के समक्ष झुकते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। आप अपने मुसलमान भाइयों को भूल गए?!!!

पूर्ववर्ती अयाह यह भी सुनिश्चित कर रही है कि यदि आस्तिक अमेरिका के बाद किसी अन्य को शक्तिशाली होते देखें, तो चिंता न करें, अल्लाह जिसकी शरीया के लिए आप लड़े, पूर्ववर्ती सभी मामले, और वे मामले जो अभी सामने आने वाले हैं, उसके हाथों में हैं। जब वह अमेरिका के विरूद्ध आपकी सहायता कर सकता है, तो वह भविष्य में आने वाले शत्रुओं के संबंध में भी शक्ति नहीं छोड़ेगा। उसकी सर्वोच्च शक्ति में कोई बदलाव नहीं होगा जिहाद हमेशा रहेगा। जब तक आप जिहाद करेंगे, तब तक अल्लाह आपकी सहायता करेगा।

''जिहाद का स्वाद मधुर और ताजा बना रहेगा। ''

जो जिहाद करते हैं और अपना बलिदान देते हैं। वो इसे इस प्रकार जीवित रखेंगे जैसे यह आज से प्रारंभ हुआ है और 40 वर्षों के बाद भी, न वे थकेंगे, न डगमगाएंगे।

हे, मेरे मुसलमान भाइयों।

अफगानिस्तान में अमेरिका की पराजय तथा इस्लामिक अमीरात की विजय संपूर्ण उम्मह की विजय है। कमजोरों और दलितों के लिए ये नव-आरंभ की सुखद खबर है। यह अल्लाह की आयत ''अल्लाह की इच्छा से कितने ही छोटे समूहों ने बड़े समूहों पर विजय पाई '' का कमजोर मुसलमानों को एक यादगार है कि प्रायः यह हुआ है कि कमजोर शक्तिशाली पर विजय पाता है। अल्लाह ने हमारे समक्ष इसका उनको वचन दिया था और आज भी अल्लाह ने इसका हमें वचन दिया है।

अफगानिस्तान में अमेरिका की पराजय और इस्लामिक अमीरात की विजय उलेमा (विद्वानों) तथा तलबा (विद्यार्थियों) को बालाकोट आंदोलन, शामली बैटलग्राउन्ड और रेशमी रुमाल आंदोलन की याद दिलाता है कि वे, जिन्हें इस्लाम का ज्ञान है, उन्हें धर्म को लागू करने के लिए किसी भी शक्ति के समक्ष नहीं झुकना चाहिए ---------- - जैसे अमीर अल मोमिनिन मुल्ला मुहम्मद उमर किसी के समक्ष नहीं झुके, बल्कि इस्लामिक सम्मान और इसकी गरिमा को बनाने तथा एक मुसलमान को बचाने के लिए नास्तिक शक्तियों के विरूद्ध उन्होंने अकेले ही युद्ध छेड़ दिया।

इसलिए उलेमा और तलबा को नास्तिक शक्तियों के अभिकथन पर अपनी पाठ्यचर्या और अपने धर्म में किसी बदलाव को स्वीकार नहीं करना चाहिए, चाहे यह एक सुन्ना या मुस्तहिब ही हो। और हमारे मदरसों के भाव की सुरक्षा हेतु खड़े होना चाहिए। उन्हें इस अज्ञानी सभ्यता की चकाचौंध और लार्ड मैकाले की जादूगरी से किसी भी कीमत पर बचाना चाहिए, इसके लिए उलेमा और तलब को चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े। यह कीमत चाहे जीवन हो, पैसा हो या घर हो। परंतु मदरसों के भाव को सुरक्षित किया जाना चाहिए, क्योंकि यदि मदरसे का भाव ही

नष्ट हो गया तो सुरक्षित करने के लिए क्या बचेगा, जिसके लिए इसकी हानि के भय से हम जिहाद से दूर हैं।

इस्लामिक अमीरात की जीत मुजाहिदीन के लिए एक मॉडल है कि जिहाद की सफलता एकता और सहयोग में सन्निहित है। यदि एकता नहीं होगी तो आपके द्वारा लगभग जीता हुआ एक युद्ध इराक और इसके निकट-पूर्व की तरह हार सकते हैं..... जिहादी समूहों के माध्यम से जिहाद के फल नष्ट हो सकते हैं तथा यदि जिहादी रैंकों के बीच एकता है, तो सभी विफल किए जा सकते हैं ..... अन्यथा खलीफा के अनुयायियों का जिहाद और खिलाफत के नाम पर कत्लेआम किया जा सकता है।

इस्लामिक अमीरात की जीत में उनके लिए भी अच्छे सबक हैं, जो जिहाद के नाम पर आईएसआईएस में फंस गए थे और अब अंतरराष्ट्रीय शक्तियों के हाथों की कठपुतली हैं। वे जिहाद और खिलाफत के नाम पर वैश्विक जिहाद को कमजोर कर रहे हैं। उनको समझना चाहिए कि ये शक्तियां उस फार्मूले का उपयोग करना चाहती हैं, जिसका उपयोग उन्होंने इराक और निकट-पूर्व में इस्लामिक अमीरात के विरूद्ध किया था ..... आईएसआईएस के खंजर से पृष्ठभूमि में उम्मह को रोकने के लिए, नंगरहर प्रांत में इसका मंच तैयार किया जा रहा है। खलीफा के नाम पर खिलाफत के अनुयायियों के कत्लेआम की तैयारियां की जा चुकी हैं।

आईएसआईएस के नाम पर लोगों को विमानों के जरिये सीरिया से हैरात प्रांत लाया जा रहा है तथा उन्हें अमेरिकी हेलिकॉप्टरों में हैरात से नंगरहर प्रांत ले जाया जा रहा है। जो लोग आईएसआईएस रैकों में है और अपने आप को समर्पित और निष्ठावान मानते हैं, उन्हें इराक और निकट-पूर्व के बाद अफगानिस्तान में षडयंत्र पर विचार करना चाहिए। प्रश्न यह है कि अमेरिका की पराजय के बाद आईएसआईएस किसके विरूद्ध जिहाद करेगा। अमेरिका के वापस चले जाने के बाद नंगरहर में आईएसआईएस को मजबूत क्यों किया जा रहा है। अमेरिकी हेलिकॉप्टरों से लोगों को वहाँ क्यों भेजा जा रहा है? वे चौबीसों घंटे उन्हें शस्त्रों से सुसज्जित क्यों किया जा रहा है? क्या उनको इस्लामिक अमीरात के विरूद्ध तैयार किया जा रहा है। सीरिया की तरह उनका सारा जिहाद मुजाहिदीनों के विरूद्ध था। मुजाहिदीन नुसाइरिसों से भूमि जीतते रहे तथा आईएसआईएस इसे उनसे छीनता रहा। आज नतीजा सबके सामने है। क्या अफगानिस्तान में इस प्रकार का जिहाद किया जाना चाहिए। उम्मह का जीता हुआ युद्ध अंतरराष्ट्रीय नास्तिक शक्तियों को पुनः नीलाम किया जाएगा।

अल्लाह इस्लामिक अमीरात को सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए ताकत प्रदान करे और इसे आईएसआईएस के फितनाह से सुरक्षित रखे। हालांकि, पिछले पांच वर्षों में ऐसे प्रयास किए गए, किंतु अभी तक कोई भी षडयंत्र सफल नहीं हो पाया है। अल्लाह यहाँ हंसने का कुफ्फार मौका न दे, जैसा कि इराक और इसके निकट-पूर्व में हुआ, बल्कि अहल सुन्नाह वल जमात को जीत दिलाए तथा इसके निकट-पूर्व में इस आईएसआईएस फितनाह का सदा के लिए अन्त कर दें,

जिसने जिहाद तथा खलीफियत की पीठ में छुरा घोंपा है। जिहाद के इन चालीस वर्षों के दौरान निश्चित रूप से यह वक्त बहुत ही कठिन रहा और मुजाहिदीनों के लिए सर्वाधिक कठिन एवं घातक फितना है। यहाँ तक कि कादियानी ने भी जिहाद के रूप को इतना नहीं बिगाड़ा जितना कि इस फितना ने बिगाड़ कर रख दिया है।

मेरे मुजाहिदीन भाइयों।

विजयी वो होता है, जो अहले सुन्नह वल जमाअत की राह पर जिहाद जारी रखता है, अन्यथा फितनाह के आने में वक्त नहीं लगेगा।

नेक काम में देरी न करो, अन्यथा तुम दंगों में फंस जाओगे, जो तुम्हारे लिए घनेरी रात जैसी होगी।

यह ऐसा समय है जब आदमी फितनाह के हाथों अपना सब कुछ बर्बाद कर देगा, क्योंकि ऐसे बहुत से फितनाह इंतजार कर रहे हैं। इसलिए अपने जिहाद को बचाओ और अपने काम पर ध्यान दो। तुम किसके साथ जिहाद कर रहे हो? कुरान और सुन्नाह की रोशनी में एक-एक चीज को परखो। जिहाद के बारे में अपने से बड़ों की बातें सुनो और उन पर अमल करो।

अल्लाह इस उम्मह को फितनाहों की सभी प्रत्यक्ष और परोक्ष बुराइयों से बचाए और यह ईद खुशी और सुखद समाचारों का जरिया बने।